विषय-वस्तु

प्रस्तावना ix

भूमिका xi

परिचय 3

पहला पत्र 5

दूसरा पत्र 13

तीसरा पत्र 19

चौथा पत्र 27

पांचवां पत्र 35

छठा पत्र 41

सातवां पत्र 49

आठवां पत्र 57

नौंवा पत्र 67

दसवां पत्र 71

लेखक के बारे में 75

अनुवादक के बारे में 77

केंट नेरबर्न के बारे में 79

प्रस्तावना

वे दस पत्र जिनसे इस सुन्दर और छोटी सी पुस्तक की रचना हुई है, वह कुछ ऐसे बेहतरीन मशहूर पत्रों में से हैं जैसे आज तक नहीं लिखे गए। पिछले कुछ सालों में यह पुस्तक इतनी मशहूर क्यों हो गई, इसका कारण यही है कि यह एक महान आत्मा की कृति है और आत्मा को ही प्रकाशित भी करती है। इन पत्रों में एक ऐसी महान और प्रेरक शक्ति व्याप्त है जिसकी वजह से हम इनके शब्दों के सामने अवाक् रह जाते हैं।

हालांकि वे खासतौर से एक नौजवान कवि को लिखे गए हैं लेकिन रिल्के के शब्द आमजन पर भी अपना असर डालते हैं। विशेषतौर पर उन लोगों पर जो अपने जीवन को रचनात्मकता से क्रियाशील रखना चाहते हैं।

मैं उस नौजवान कवि "फ्रैंज काप्पूस" के शब्दों से ही इस परिचयात्मक चर्चा का समापन करना चाहूंगा जिन्हें यह पत्र लिखे गए थे, "जब कोई महान आत्मा बोल रही हो तब कमतर लोगों को चुप ही रहना चाहिए।"

मार्क एलन

भूमिका

हममें से वे सभी लोग जो कला के क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं वे यह भली भांति जानते हैं कि यह एक एकाकीपन का जीवन है। हमें अक्सर ऐसा महसूस होता है कि हम एकान्त सपनों का जीवन जी रहे हैं, दूसरों से असम्बद्ध एक ऐसी परिकल्पना जिसे दूसरे न तो महत्व देते हैं और न ही उसमें शिरकत करते हैं। कभी-कभी तो इसका एहसास तीव्र भी होता है। ऐसे समय में हम उस एक उदार आवाज के लिए तरसते हैं जो कि हमारे एकाकी जीवन तक पहुंचे और वह समझ से भी भरी हो। इसके साथ-साथ यह हमको भरोसा भी दिलाए कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह सही है और हमारा चुना हुआ रास्ता सम्मानप्रद है तथा इसके लिए जो भी पुरस्कार हमें मिलता है वह हमारे एकाकीपन के अनुरूप है और इसी कीमत पर मिला भी है।

रेनर मारिया रिल्के एक ऐसी ही आवाज़ है जो सौ साल से भी अधिक समय से हर अभिलाषी कलाकार तक स्पष्ट और दिलासापूर्ण बन कर पहुंचती आई है। अतींद्रिय परिज्ञान लिए हुए इस छोटी सी किताब, *"एक युवा कवि को पत्र"* में उनकी आवाज़ बहुत स्पष्ट सुनाई देती है।

यह कोई सरल सी किताब है या सिर्फ छलावा। इसमें दस वे छोटे-छोटे पत्र हैं जो पांच वर्षों के बीच एक उत्साही नौजवान कवि को लिखे गए थे और जिसका नाम फ्रांज जेवर काप्पुस है। यह पत्र खुलकर विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हैं। विश्व व्यवस्था की खतरनाक स्थिति से लेकर विश्वास के मूल्यों और शारीरिक एवं रचनात्मक आनंद के निकटतम स्वरूप तक। किन्तु बार-बार वे अपने मौलिक विषय, रचनात्कता के अकेलेपन पर लौट आते हैं और यह बताते हैं कि जो लोग कला की सेवा करते हैं, उनसे उनकी मांगें क्या हैं।

इसकी क्या वजह है कि यह पतली सी किताब, जो सालों पहले उस ज़माने में लिखी गई थी और जो हमारे मौज़ूदा ज़माने से बिल्कुल अलग सा था, यह किताब आज भी हमसे पूरे अधिकार के साथ बात करती है। रिल्के की व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता की ओर इशारा करना आसान है साथ ही साथ यह यकीन करना भी कि उसने अपना असर डाला है। मगर थोड़ा पीछे निगाह डालें तो पाएंगे कि इसका स्रोत अर्थात् ये पत्र घटनाओं के एक अद्‌भुत संयोग की उपज है जिन्होंने एक जादुई चुम्बकत्व से विचारों और संवेदनाओं का एक अपूर्व मिश्रण कर दिखाया और यही इन पत्रों को चिरस्थाई महत्व भी प्रदान करते हैं।

तीन परिस्थितियां जिन्होंने इस जुड़ाव को जन्म दिया, वे हैं रिल्के की पृष्ठ भूमि, उनकी उम्र जिस समय उन्होंने ये पत्र लिखे थे और मूर्तिकार आगस्ट रोबिन का उन पर गहरा असर। रिल्के जिस पृष्ठभूमि से आए थे, उसने उन्हें हर उस व्यक्ति के प्रति अत्यंत संवेदनशील बनाया जो संघर्ष करके कलाकार बनना चाहता था। उनके पिता एक पेशेवर फौजी रह चुके थे। उन्होंने अपने बेटे को एक फौजी बोर्डिंग स्कूल में यह सोच कर भेजा था कि वह एक अफसर बनेगा। रिल्के शरीर से कमजोर और भावुक प्रकृति के थे तथा कठोर शारीरिक श्रम और स्कूल के कड़े अनुशासन के अनुकूल नहीं थे। साथ ही शिक्षकों और सहपाठियों के भांति-भांति के अत्याचारों से भी परेशान होते रहते थे। किसी तरह उन्होंने अपनी शुरुआती उभरती युवावस्था के पांच वर्ष वहाँ काटे। शारीरिक और मानसिक रूप से पूरी तरह निढाल हो जाने के कारण उन्हें इसकी इजाज़त मिल गई कि वह अपने घर प्राग वापस

लौट जाएं और आगे की जो भी पढ़ाई करनी हो, वहीं रह कर करें।

विगत इन कठिन पांच वर्षों के दौरान आत्म अभिव्यक्ति के साधन के रूप में कविता लिखने में ही उन्हें सबसे बड़ी शांति मिली। शायद यही उनके निखार की प्रक्रिया भी थी जिसे उन्होंने "नरकवास" नाम दे रखा था जिससे वह शब्दों और सौंदर्य के अर्थ को कुछ हद तक समझ भी पाए।

उसी सैनिक अकादमी से, बारह साल बाद, फ्रांज काप्पुस ने उन्हें पत्र लिखे और उनसे एक कलाकार कैसे जीवन व्यतीत करे, इस विषय पर सलाह मांगी। इस पत्र ने रिल्के के मन के तारों को झनझना दिया और अपने हृदय के पवित्रतम स्थान से वे इस निष्ठुर और दुसाध्य दुनिया में एक कलाकार के अकेलेपन से ग्रस्त जीवन की व्यथा लिखने पर विवश हुए।

रिल्के की उम्र का भी इन पत्रों के चिरस्थाई होने पर गहरा असर था क्योंकि इनकी भावनात्मक गहराई और विवेकपूर्ण तटस्थता के भाव से पाठक यह सोचने लगता है कि लेखक एक परिपक्व प्रौढ़ व्यक्ति होगा और जो अपनी युवावस्था के संघर्षों पर निगाह डाल रहा है। किन्तु ये पत्र उस समय लिखे गए थे जब रिल्के 28 से 33 वर्षों के बीच थे। ये वे वर्ष थे जब रिल्के स्वयं को एक कलाकार के रूप में पहचान दिलाने में संघर्षरत थे, शादी करने जा रहे थे तथा यात्राएँ करने और लोगों से मिलने जुलने में मशगूल थे क्योंकि जिस ताज़गी की हम सबको जरुरत होती है, उसे चढ़ती जवानी के यही दिन तो दे पाते हैं। वे अब सयाने हो चुके थे और अपनी बौद्धिक क्षमताओं से परिपूर्ण थे साथ ही वे नौजवान भी थे तथा उन पर जवानी की खोजों का जुनून भी सवार था। यही जीवन में अंतदृष्टि प्रदान करते हैं, प्रेम और कला की तात्कालिकता और हकीकत तो केवल उन्ही के पास हो सकती है जिनमें समान भावनाएं जीवन्त और विद्यमान हों।

किन्तु अन्तिम विवेचना यही साबित करती है कि रिल्के के अन्तर्मन पर पड़ने वाली वह विराट छाया, फ्रांसीसी शिल्पकार, आगस्टे रोडिन की ही थी जिसने उस प्रखर बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति को इतना संवेदनशील और पारखी बना दिया जो जीवन के कालजयी रहस्यों और कलात्मकता की प्रक्रिया का प्रवक्ता बन गया।

फ्रांज काप्पुस को लिखे गए पहले पत्रों से भी एक साल पहले सन् 1902 में रिल्के इस भावना से पेरिस आए थे कि वे वहां रोडिन पर एक वृत्त प्रबंध (मोनो ग्राफ) लिखें। उनकी पत्नी क्लारा जो स्वयं एक मूर्तिकार थीं जिन्हें अपने गुरू "रोडिन" के साथ काम करते हुए कला का अभ्यास करना था। रिल्के के लिए यह सुनहरा अवसर था जब वे स्वयं उस चोटी के प्रतिभाशाली कलाकार को बारीकी से अपना काम करते देख सकते थे। उनकी संलग्नता ऐसी थी कि जिसे वे अपने अंदर दीवानगी से पाना चाहते थे।

"रोडिन" ठीक वैसे ही थे जैसे रिल्के बिल्कुल नहीं थे – आत्मविश्वास से भरे, मजबूत कद काठी के वासनामय, एक बुजुर्ग जिसकी कलात्मक पहचान बन चुकी थी और उनकी आवाज़ में भी कला का प्रभाव गूंजता था। वे मौलिकता के साकार रूप थे, उनकी वे तराशी हुई भौंहें, किसी मेहनतकश मजदूर जैसा चौड़ा शरीर, ऐसी गड़ती हुई आंखें जो किसी को गौर से देख लें तो भीतर तक छेदती चली जायं। वे बहुत कम बोलते थे पर यह सारा कुछ उनकी रचना से ही उजागर होता था। जैसा कि रिल्के ने खुद कहा है, रोडिन अपनी कला को जीते थे, रोजमर्रा के व्यवधानों के बीच उन्हें इसकी तलाश नहीं करनी पड़ती थी। इसके विपरीत रिल्के नाजुक थे, अक्सर बीमार रहने वाले उस नौजवान की तरह जो कोमल संवेदनाओं के साथ अपनी कला की दिशा को लेकर निश्चिन्त नहीं था। उन्हें लंबे-लंबे समय तक कलात्मक भावनाओं का अभाव और आत्मविश्वास में कमी का एहसास होता रहता था। दुबले-पतले, कम वजन वाले रिल्के जो आसानी से अपने कला के काम से विचलित हो जाते थे और हमेशा उन दिनों के डर से घिरे रहते थे जब कोई प्रेरणा उनके पास नहीं आती थी खासतौर से तब जब उनके पास सिवा मृत शब्दों के कुछ भी नहीं रहता था "लाशों की तरह भारी .... मरे हुए शब्द"।

रोडिन उनकी किसी कलाकार की कल्पना के मूर्तिमान स्वरूप से थे और कैसे भी वह उनके सामने खड़े नहीं रह पाते थे। एक दर्पण की तरह जिसमें उसकी अपनी कमियां और अनिश्चितताएं प्रतिबिम्बित होती रहती थीं और वास्तव में वैसा ही कुछ घटित भी हुआ।

रोडिन के व्यक्तित्व में रिल्के ने वह सब कुछ पाया जो एक आदर्श मानक कलाकार के रूप में वह खुद में पाना चाहते थे। फ्रांज काप्पुस को लिखे छोटे-छोटे पत्रों में उन्होंने इस अधिकार को अपना लबादा बना कर उसमें संबोधित शंका और असुरक्षा को ढक लिया था। यह सब उनके पत्रों में झलकता भी है। वे तत्काल एक चतुर, दृढसंकल्प कलाकार के रूप में उभर आते हैं जैसा कि वे अपनी कल्पना में स्वयं को चाहते भी हैं। जबकि वे आंतरिक रूप से किसी नए कलाकार के संघर्षों और अनुभवों से पूरी तरह परिचित थे फिर भी वे अपनी मौलिक संवेदनाओं की सुरक्षा करते हुए पूरी नैतिक जिम्मेदारी के साथ किसी महान कलाकार की भंगिमा बनाए रखने में सफल होते हैं।

जब नौजवान काप्पुस उसी फौजी अकादमी के हाते से उनको पत्र लिखता है जहां दस वर्ष पहले उसकी खुद की रचनात्मक आत्मा लगभग कुचल ही गई थी, उन्हें लगा कि उन्हें एक अच्छा अवसर मिल गया है जहां वह अपनी उन दृढ़ धारणाओं को इस नौजवान के साथ पूरी ईमानदारी और जोश के साथ साझा कर सकते हैं जिनका इस बेरहम और बेदर्द दुनिया में एक युवा कलाकार को सामना करना पड़ता है। वास्तव में वह अपने जीवन के ही कलात्मक कमजोर सपनों को व्यक्त कर रहा होता है।

हम पाठक तो इस अत्यन्त प्रतिभाशाली नौजवान आत्मा के सामने अवाक् हो जाते हैं कि उसने कितनी गहरी समझदारी से अपने जीवन की विकराल नीरवता और एकान्त के साथ ही उत्फुल्ल आनंद का चित्रण किया है।

आगे अपने जीवन में रिल्के ने पुरातत्व कला के अपोलो की अपूर्ण धड़ प्रतिमा पर कुछ कविताएं भी लिखीं। उस सिर विहीन यूनानी शिल्पकला जिससे इस टूटी-फूटी दशा में भी जिन्दगी की किरणें निकलती थीं और इसी के सामने खड़े होकर उन्होंने कहा, "यहां कोई ऐसी जगह नहीं जो तुम्हें ना देखे। तुम्हें अपने जीवन का रूख बदलना ही होगा।" हममें से कोई भी व्यक्ति जो कला साधना में संघर्षरत हो, उसके अतीत और सपनों से वाकिफ़ हो, जब वह इन दस पत्रों को पढ़ेगा तो उसके तन में वैसी ही कंपकपी महसूस होगी जैसी अपोलो

की धड़ प्रतिमा के सामने खड़े रिल्के को महसूस हुई थी। रिल्के लिखते हैं, "ऐसी कोई जगह नहीं है जो हमको देखती न हो, हमें अवश्य अपनी ज़िन्दगी बदल देनी चाहिए।"

केंट नेरबर्न
बेमिड्जी, मिनेसोटा
जनवरी 2000

एक युवा कवि को पत्र

परिचय

साल 1902 और शरद ऋतु ढल रही थी। वियना स्थित मिलिट्री अकादमी के उस नए खंड में, प्राचीन शाहबलूत के वृक्षों के साए तले बैठा मैं किताब पढ़ रहा था। मैं इसके शब्दों में इतना डूबा हुआ था कि पता ही नहीं चला कि कब अकादमी के विद्वान और लोकप्रिय पादरी, प्रोफेसर होरसक जो कि कर्मचारियों में अकेले गैर अधिकारी थे, मेरे पास आकर बैठ गए। मेरे हाथ से उन्होंने किताब ली, उसका आवरण देखा और फिर अपना सिर हिला कर बोले, "रेनर मारिया रिल्के की कविताएं?" पन्ने पलटते हुए वे इसे कभी ध्यान से पढ़ते और फिर उदास नज़रों से कहीं दूर शून्य में देखने लगते। और अंत में अपना सिर हिलाते हुए बोले, "मेरा शिष्य, रेनर रिल्के, आखिर कवि बन ही गया।" मैनें उस दुबले पतले लड़के के बारे में तब जाना जब उसके माता-पिता ने पंद्रह साल पहले उसे मिलिट्री अकादमी में कमीशन-प्राप्त अधिकारी बनने के लिए भेजा था। होरसक उस समय पादरी थे। अपने भूतपूर्व छात्र की यादे अभी तक उनके जेहन में बनी हुई थीं। उसे वे एक शांत, गंभीर और गुणी युवा मानते थे जो अपने आप में सिमटे रह कर छात्रावास की तनाव भरी जिन्दगी में अकेले रहना चाहता था।

चार साल के बाद वह अन्य छात्रों के साथ महीच वेइस्किर्चेन स्थित मिलिट्री अकादमी में चले गए। शायद वे वहां के तनाव ग्रस्त नियम सह नहीं पाए थे इसलिए उनके माता-पिता ने उन्हें वहां से निकाल कर प्राग में किसी विद्यालय में पढ़ाई जारी रखने के लिए भेज दिया था। उनके जीवन के बाद के घटनाक्रम प्रोफेसर होरसक को याद नहीं थे।

अपनी बातचीत के बाद, मैनें तय किया कि रेनर मारिया रिल्के को मैं अपनी काव्य कृतियां भेजकर उनकी राय लूंगा। मैं कुल बीस साल का था और पूरी तरह से अपनी जीविका के चौखट तक भी नही पहुंचा था और मन में उसके प्रति एक विद्रोह सा भी था। बजाय किसी दूसरे के, *इन सेलिब्रशन आफ माइसेल्फ* के लेखक से मुझे विवेक और तसल्ली की आशा थी। मेरा अभिप्राय तो नहीं था पर पत्र के साथ-साथ मैनें अपनी कविताएं भी इसी के साथ संलग्न कर दीं जिनमें मैनें अपने अंतरतम को भी मुक्त रूप से व्यक्त किया था। ऐसा मेरे साथ न तो कभी पहले ना ही बाद में किसी और के साथ हुआ था। मेरे पहले पत्र का जवाब कई हफ्तों बाद आया और इसकी नीली डाक मोहर इसके पेरिस से आने की सूचना दे रही थी। पत्र मेरे हाथ में भारी लग रहा था और लिफाफे पर वही सुंदर, साफ और विश्वास भरी हस्तलिपि जो पत्र की पहली पंक्ति से आखिरी पंक्ति तक नजर आती थी। रेनर मारिया रिल्के और मेरे बीच पत्राचार इसी तरह शुरू हुआ और सन् 1908 तक चलता रहा। फिर धीरे-धीरे पत्र कम होते चले गए और आखिर में रूक गए क्योंकि शायद जिन्दगी ने मुझे उन राहों में ढकेल दिया जिन राहों से कवि की नाजुक, स्नेहपूर्ण हृदयस्पर्शी चिंता मुझे बचाना चाहती होगी।

पर यह इतना महत्वपूर्ण नहीं जितने वे दस पत्र हैं – उस दुनिया को समझने के लिए जिसमें रेनर मारिया रिल्के रहते और काम करते थे। यह उन लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है जो इस वक्त विकसित हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। जब एक महान और विशिष्ट बोले तब कमतर लोगों का शांत रहना ही उचित है।

फ्रांज जावर काप्पुस
बर्लिन, जून 1929

पहला
पत्र

"अपने अंतर में जाओ और
अपना अस्तित्व वहीं ढूंढो
जहाँ तुम्हारी जिन्दगी का स्रोत है।
मेरे पास इससे बेहतर मशवरा नहीं है।"

पेरिस
17 फरवरी 1903

महोदय,

आपका पत्र मुझे कुछ ही दिन पहले मिला। आपके अपार स्नेह और विश्वास का मैं आभारी हूं। आपकी काव्य शैली पर मैं कोई टिप्पणी नहीं कर सकता; आलोचना करना मेरे स्वभाव में नहीं है। आलोचनात्मक शब्दों का कलाकृति पर सबसे अधिक प्रभाव होता है। यह स्थिति हमेशा दुर्भाग्यपूर्ण और मिथ्याबोध के कारण बनती है। जैसा कि लोग आमतौर पर समझते हैं कि बहुत सी बातें सरलता से न तो समझ में आती हैं और न ही समझाई जा सकती हैं। ज्यादातर घटनाएं हमारी अभिव्यक्ति से परे होती हैं, यह उस जगह बसती हैं जहां तक दुनिया अभी पहुंची ही नहीं है। समझने और समझाने के मामले में कलाकृतियां तो और भी कठिन हैं यह वह रहस्यमयी सत्ता हैं जिनकी जिन्दगी साधारण क्षणभंगुर जीवन की तुलना में कहीं अधिक दृढ़ होती हैं।

प्रारंभ में ही यह सब कहने के बाद अब मैं आपको यह कहने का साहस करूंगा कि आपके काव्य में कोई अनोखी शैली नहीं है पर इसमें किसी व्यक्तिगत विषय को प्रकट करने की शांत छिपी हुई चाह है। इस बात का एहसास मुझ उस आखिरी कविता "माय सोल" में मिला। मुझे लगा जैसे आपकी अंतरात्मा अभिव्यक्ति की तलाश कर रही हो। फिर उस सुन्दर कविता "टू लियोपर्दी" में मानो महान सी अभिव्यक्ति, विशिष्टता से भरपूर पूर्णता को तरस रही हो। इतना होने पर भी यह कविताएं बहुत बेहतर नहीं कहीं जा सकती, लियोपर्दी भी अभी तक आत्मनिर्भर नहीं है। अपने स्नेह भरे पत्र में आपने इस बात को स्वयं स्वीकार किया है और कुछ त्रुटियों का विश्लेषण भी किया है जिनका मुझे पढ़ते हुए एहसास तो हुआ पर मैं उन्हें शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पा रहा हूं।

आप पूछते हो कि क्या आपकी कविताएं अच्छी हैं? आप इन्हें प्रकाशकों को भेजते हैं; अन्य कविताओं से तुलना करते हैं और जब कुछ प्रकाशक इन्हें अस्वीकृत कर देते हैं तब आप दुःखी भी होते हैं। चूंकि आपने मुझे अवसर दिया है इसलिए मेरी सलाह है कि आप यह सब करना छोड़ दें। आप अभी इसे सिर्फ बाहर से देख रहे हैं पर अभी आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। इस विषय पर आपको कोई सलाह नहीं दे सकता, कोई भी सहायता नहीं कर सकता।

इसका सिर्फ एक ही रास्ता है; अपने भीतर जाइए। उस कारण को खोजिए, उस आवेग को ढूंढिए जो आपको लिखने पर विवश कर रहा है। इसे इस रूप में आंकिए कि क्या इसकी जड़ें आपके मन की गहराई तक पहुंच रही हैं? क्या आप दृढ़ता से कह सकते हैं कि यदि लिखने से आपको रोका गया तब मर जाएंगे? और सबसे बड़ी बात, रात के गहरे सन्नाटे में अपने आप से पूछिएः क्या मुझे लिखना चाहिए? अपने मन की गहराइयों में इसका सच्चा उत्तर ढूंढिए और यदि उत्तर "हां" में है तथा आप इस गंभीर सवाल का जवाब आत्मविश्वास की सरलता के साथ देते हैं कि "हां, मुझे करना है" तब इसे अपना जीवन बनाइए। अब यह आपकी ज़रुरत बन चुकी है। यहांतक कि आपकी जिन्दगी इस सांसारिक और महत्वहीन पल में भी उसी तीव्र चाहत की गवाह होनी चाहिए।

अब प्रकृति के समीप आइए और कल्पना करिए कि आप ही वह पहले पुरुष हैं और अब जो देखा, जो अनुभव किया तथा किसे प्यार किया एवं क्या खोया, सब लिख डालिए। कम से कम शुरुआत तो प्रेम गीत से न ही करें; यह बहुत चुनौतीपूर्ण काम होता है। कुछ व्यक्तिगत और विलक्षण लिखने के लिए बहुत परिपक्वता की जरुरत होती है खासतौर से तब जब बहुत सी महान कृतियां पहले से ही उपलब्ध हों। सामान्य विषयों पर लिखने से बचिए। अपनी रोजमर्रा की घटनाओं का सहारा लीजिए। अपने दुःख, अपनी चाहतें, अपने विचार और किसी भी सुंदर चीज पर आपका यकीन, इन सभी पर लिख डालिए। उत्साह, विनम्रता और गंभीरता के साथ इनका वर्णन कीजिए। अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपने आस पास की चीजों, अपने सपनों के दृश्य और अपनी स्मृति के विषयों का भी सहारा लीजिए।

यदि लगे कि आपका रोजमर्रा का जीवन वर्णन के योग्य नहीं है तो भी जिन्दगी से शिकवा न कीजिए। अपने आप से शिकायत कीजिए कि आप उस दर्ज़े के कवि नहीं है जो उसकी बेशुमार दौलत को हासिल कर सका हो। रचनात्मक कवि निर्धन नहीं होता उसके लिए कुछ भी निरर्थक या अनावश्यक नहीं है। आप अगर क़ैदखाने में भी होते जिसकी दीवारें बाहरी दुनिया से आपका संबंध खत्म कर देतीं तब भी क्या आपका बचपन वो बेशकीमती दौलत यानी आपकी यादों का खजाना आपके पास नहीं होगा? अपना ध्यान उसी पर केंद्रित कीजिए। अतीत की उन हसीन यादों को फिर से जीवित कीजिए। आपका अकेलापन आपका घर बनकर एक हसीन सुबह की तरह आपका स्वागत करेगा और आपकी बेचैनी दूर से ही गुजर जायगी।

जब आप अपनी भीतर की दुनिया में पूरी तरह से डूबे होंगे और तब जो कविता अंदर से उभर कर आएगी, उसके लिए आप किसी और से नही पूछेंगे कि वह कविता अच्छी है या नहीं। न ही आप प्रकाशको को उस कविता के बारे में यकीन दिलाने की कोशिश करेंगे। आप उस कविता में अपनी ही आवाज सुनेंगे; उसमें अपनी ही जिन्दगी का एक हिस्सा पाएंगे, यह आपकी अपनी ही अमानत होगी एक ऐसी कलाकृति जो अनिवार्यता से जन्म लेती है और उत्कृष्ट भी होती है। उसका यह स्रोत उसके बेहतरीन होने का पैमाना है; और कुछ भी नहीं।

इसीलिए मेरे दोस्त, अपने अंतर में जाओ और अपना अस्तित्व वहीं ढूंढो जहां तुम्हारी जिन्दगी का स्रोत है। मेरे पास तुम्हारे लिए इससे अच्छा मशवरा नहीं है। अपने स्रोत में ही आपको अपना जवाब मिलेगा कि आपको लिखना है कि नहीं और बिना विश्लेषण किए जो भी जवाब हो उसे स्वीकार करो। शायद तुम्हें अपने आप ही पता चल जायगा कि वाकई तुम एक लेखक कहे जा सकते हो। बिना पुरस्कार की चिन्ता किए ही विधि का निर्णय स्वीकार करो इसका बोझ और इसकी भव्यता बर्दाश्त करो क्योंकि पुरस्कार तो संभवतः अनायास ही मिल जाता है। रचनात्मक कलाकार की दुनिया अपनी ही होनी चाहिए और उसे सब कुछ अपने अन्दर ही प्राप्त होना चाहिए यानी उस प्रकृति में जिसे उसने अपना जीवन साथी बना लिया है।

यह भी संभव है कि अपने भीतर की दुनिया यानी उस रहस्यमय और एकांत जगह पहुँच कर आपको लगे कि आपको कवि नहीं बनना चाहिए। जैसा कि मैनें कहा कि यह एहसास कि व्यक्ति बिना लिखे भी जी सकता है इस बात का सूचक होगा कि आपको नहीं लिखना चाहिए। इतना होने पर भी मैं कहूंगा कि आपकी यह अंतर यात्रा व्यर्थ नहीं गई। यकीनन यहीं से आपका जीवन अपना रास्ता खुद ही ढूंढ लेगा। मेरी शुभकामना यही रहेगी कि ये रास्ते आपके लिए शुभ और समृद्धिपूर्ण हों।

और क्या बताऊं आपको? सब कुछ तो कह दिया मैनें। मैं केवल यही कहना चाहता था कि आप अपने विकास के पथ पर शांति और गंभीरता के साथ बढ़ें। बाहर देखने और वहीं उत्तर ढूंढने से आप इस प्रक्रिया में रूकावट डाल सकते हैं – इनके जवाब शायद आपको अपने अंदरूनी एहसास और शांति के उन्हीं पलों में ही मिल सकते हैं।

आपके लेखन में प्रोफेसर होरसक का नाम देखकर मुझे अपार हर्ष हुआ। उन जैसे दरियादिल विद्वान का मैं हमेशा से ऋणी हूं। उनके लिए मेरे मन में अपार श्रद्धा है। आप कृपया उनको मेरा भावुकता भरा स्नेह भिजवा दीजिएगा। उनका मेरे बारे में सोचना मुझे अच्छा लगा।

आपका काव्य जिसे आपने मुझे सौपा था आपको वापस भेज रहा हूं। मैं आपको पुनः धन्यवाद देता हूं कि आपने बिना शर्त मुझमें पूर्ण

विश्वास जताया। सच में मैं पूर्णतया अभिभूत हुआ और मैनें कोशिश भी की कि अपनी काबिलियत के दायरे में रह कर आपकी योग्यता का पात्र बन सकूं बजाय इसके कि मैं एक अजनबी बना रहता जोकि वाकई मैं हूं भी।

स्नेह सहित

रेनर मारिया रिल्के